बिहार सरकार

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

बिहार सरकार

माह जनवरी

- जानवरों को ठंड, ओस एवं कुहरे से बचावें। पशुओं को बोरी की झूल बनाकर ओढाएं।
- सर्दी से बचाने के लिये रात के समय पशुओं को घर के अंदर बांधकर रखें।
- पशुओं को संकरे/नम स्थान में बंद कर धुंआ आदि से गर्मी पहुँचाने की कोशिश न करें।
- पशुओं की पीने के लिये ताजा या गुनगुना पानी दें।
- दुधारू पशुओं को तेल एवं गुड़ देने से भी शरीर का तापमान सामान्य बनाये रखने में सहायता मिलती है।
- खुरहा एवं मुँहपका (एफ.एम.डी.) का टीका सभी उम्र के पशुओं को लगवा दें।
- पेट में अंत:परजीवियों की नियमित दवा दें।
- पशुओं को बाह्य परजीवियों से बचाने के लिये पशुशाला के फर्श, दीवार आदि को साफ रखें एवं बाह्य परजीवी नाशक दवाओं का छिड़काव करें।
- थनैला रोग से बचाव करें।
- पशुओं को रात्रि में पुआल पर रखें।
- उन्हें स्वच्छ एवं ताजा पानी पीने को दें।
- इस माह में मुर्गियों को विशेषकर कोराइजा, ब्रौनकाइटिस, रानीखेत बीमारी से बचाने की आवश्यकता है। रोग से बचाव करें तथा टीका नियमित रूप से दें।
- यदि हरा चारा के लिये बरसीम की खेती की गई है तो 20-30 दिन एवं जई में 20-22 दिन के अंतराल पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- अफारा रोग से बचाव करें। ज्यादा बरसीम खाने से इस माह में अक्सर यह बीमारी होती है।

प्रकाशक :- पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना-1, दूरभाष सं०: 0612-2217872
सौजन्य :- पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

बिहार सरकार

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

माह फरवरी

- किसान भाई को अपने पशुओं को ठंड से बचाने हेतु जूट के चादरों या कम्बल से शरीर ढ़कने का इंतजाम करना चाहिए।
- पशुओं को दिन में धूप में रखें तथा रात में भी गर्म जगह पर रखने की व्यवस्था करें तथा पुआल की व्यवस्था करें।
- कुक्कुटों को ठंड से बचाव हेतु हीट बल्ब एवं हीटर का उपयोग करें।
- पशुशाला, पशुओं एवं कुक्कुटफार्मो की सफाई नियमित रूप से करें तथा कुक्कुटफामो के बेडिंग को धूप दिखाएं।
- इस माह में ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखें। उनका शरीर गर्म रखा जाए तथा उचित मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, मिनरल्स, विटामिन से भरपूर भोजन दिया जाय।
- नवजात गाय, भैंस या भेड़ बकरियों को अन्तः परजीवी नाशक दवाएँ पशु चिकित्सक की सलाह से नियमित रूप से दें। ठंड से बचाएं। विटामिन की उचित मात्रा दें।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए दूध पूरा व मुट्ठी बांध कर निकालें।
- बरसीम व जई फसल की सही अवस्था पर चारे के लिए कटाई करते रहें तथा सिंचाई की व्यवस्था करें।
- बरसीम एवं जई की सिंचाई क्रमशः 12-14 एवं 18-20 दिनों के अन्तराल पर करें।
- भेड़ एवं बकरी पालक अपने भेड़ एवं बकरी में पी.पी.आर. का टीकाकरण कराएँ।

प्रकाशक :– पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना-1, दूरभाष सं०: 0612-2217872
सौजन्य :– पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

बिहार सरकार

माह मार्च

- इस माह में गर्मी में होने वाले रोगों के प्रति सावधानी रखनी चाहिए।
- मच्छर, मक्खी, बाह्यपरजीवी (चमोकन, अठगोड़वा आदि) जीवों के नियंत्रण हेतु आवश्यक दवाओं का उपयोग पशु चिकित्सक के परामर्श से करना चाहिए।
- आने वाले समय में पशुओं में गर्भ संबंधी एवं अन्य रोगों की समस्या होने पर तुरंत चिकित्सीय परामर्श लेना चाहिए।
- यदि दूध उत्पादन में कमी हो रही हो तो पशुओं के पोषण पर विशेष ध्यान देना चाहिए। साथ ही पशु चिकित्सक के परामर्शानुसार आवश्यक जाँच यथा दूध, पेशाब, खून जाँच इत्यादि करवाना चाहिए।
- इस माह में पशुओं को आगामी माहों में पर्याप्त मात्रा में हरे चारे की उपलब्धता हेतु ज्वार, मक्का, लोबिया, सौरघम, बाजरा एवं सूडान इत्यादि हरे चारे की बुआई करनी चाहिए।
- पूर्व में प्रत्यारोपित हरे चारे यथा बरसीम, जई आदि की सिंचाई 10-15 दिन के अंतराल पर करना श्रेयष्कर है।
- बहुऋतुजीवी चारा घास जैसे हाइब्रिड नेपियर, गिनी घास इत्यादि की रोपाई पहले से तैयार खेतों में करें।
- गर्मी के मौसम में हरे चारे की कमी को पूरा करने के लिए हरे चारे से साइलेज तैयार करना चाहिए।
- पशुओं को उनकी शारीरिक अवस्था एवं आवश्यकता के अनुसार उचित मात्रा में खनिज मिश्रण (30-50 ग्राम) प्रतिदिन देना चाहिए।
- इस माह में पशुओं को खुरपका-मुँहपका (एफ.एम.डी.), ऐन्थ्रेक्स, रेबीज एवं अन्य रोगों का टीकाकरण अगर नहीं हुआ है तो टीकाकारण अवश्य करावें।

प्रकाशक :- पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना-1, दूरभाष सं०: 0612-2217872
सौजन्य :- पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

माह अप्रैल

- पशुओं को एच.एस. एवं बी.क्यू. रोग से बचाव का टीका अवश्य लगाएं।
- इस माह में अधिक गर्मी की संभावना रहती है। पशुओं में जल व लवण की कमी, भूख कम होना एवं कम उत्पादन अधिक तापमान के प्रमुख लक्षण है। अतः इससे पशुओं के बचाने का प्रयास करें।
- पशुओं को दोपहर में छाया वाले एवं हवादार स्थान में रखें।
- पशुओं को दिन में कम से कम चार बार पानी पिलाने का प्रयास करें।
- थनैला रोग की पहचान और निदान के उपाय करें।
- गाभिन पशुओं को अतिरिक्त आहार दें एवं ब्याने वाले पशुओं को प्रसूति बुखार से बचाने के लिए 50-60 ग्राम खनिज मिश्रण नियमित रूप से दें।
- भेड़ पालक, मेमनों में **Sheep Pox** (भेड़ चेचक) एवं **Enterotoxaemia** का टीका पशु चिकित्सक की सलाह से जरूर लगवायें।
- मुर्गीपालक फार्म की सफाई पर विशेष ध्यान दें। लिटर सूखा एवं स्वच्छ रखें और मुर्गियों में कृमिनाशक दवा का इस्तेमाल पशु चिकित्सक की सलाह से अवश्य करें। पानी की समुचित व्यवस्था रखें।
- पशुओं को बाह्य परजीवी से बचाने के लिए पशु चिकित्सक की सलाह से दवा का छिड़काव नियमित रूप से करें।
- पशुओं में अन्तः परजीवी नाशक दवा पशु चिकित्सक की सलाह से नियमित रूप से दें।
- पशुओं को संक्रामक रोग जैसे गलाघोंटू, ब्लैक क्वाटर (लंगड़ी रोग) के रोगरोधी टीके के समय पर लगवायें।
- खरीफ में हरा चारा लेने के लिए ज्वार एवं मक्का की बुआई करें।
- हरे चारे की फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए उन्नत किस्म के बीज का प्रयोग करें।
- गर्मी अधिक होने पर फसल की सिंचाई सायंकाल में करें।
- इस मौसम में पशुओं में लवण विशेषकर फॉस्फोरस की कमी के कारण 'पाइका' के लक्षण नजर आने लगते हैं। अतः पशुओं को खनिज लवण मिश्रण अवश्य दें।
- प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज, विटामिन सभी संतुलित मात्रा में प्राप्त करने के लिए पशुपालक एजोला घास का प्रयोग करें।
- हरा चारा के लिए बोई गई मक्का, बाजरा, एवं ज्वार की कटाई 45-50 दिन की अवस्था में करें।

प्रकाशक :- पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना-1, दूरभाष सं०: 0612-2217872
सौजन्य :- पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

बिहार सरकार

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

माह मई

- इस माह से अधिक गर्मी रहती है, साथ ही कुछ स्थानों पर आंधी तूफान के साथ वर्षा भी होती है।
- अधिक गर्मी से पशुओं में लू लगना, जल एवं लवण की कमी, भूख कम होना एवं कम उत्पादन जैसे लक्षण देखने को मिलते हैं।
- पशुओं को धूप व लू से बचाने का उपाय करें।
- गर्मी में पशुओं को छायेदार स्थान पर रखें एवं पानी की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करें।
- पशुओं में लवणों की कमी नहीं होने पाए, इस हेतु लवण मिश्रण निर्धारित मात्रा में दाने या पानी में मिलाकर दें।
- पशुओं के आहार में मौसम के अनुसार आवश्यक बदलाव करें।
- पशुओं के आहार में गेहूँ का चोकर और जौ की मात्रा बढ़ाएं।
- दुग्ध उत्पादन क्षमता बनी रहे इसके लिए उसे संतुलित आहार दें।
- चमोकन एवं पेट की कृमि से बचाव का उचित प्रबंध करें।
- खरीफ में हरा चारा लेने के लिए ज्वार एवं मक्का की बुआई करें।
- हरे चारे की फसल से अधिक उपज लेने हेतु उन्नत किस्म के बीच का प्रयोग करें।
- भेड़ पालक इस माह में भेड़ के ऊन कतरने का कार्य करें।

प्रकाशक :– पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना–1, दूरभाष सं०: 0612-2217872
सौजन्य :– पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

बिहार सरकार

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

- एच.एस. एवं बी.क्यू. टीका के 10-15 दिन पहले सभी पशु को डिवर्मिंग कर देना चाहिए ताकि टीका प्रभावी हो।
- पशुओं को 50-60 ग्राम खनिज मिश्रण एवं 20 ग्राम नमक प्रतिदिन देना चाहिए।
- गर्मियों के मौसम में पैदा की गई ज्वार में जहरीला पदार्थ हो सकता है, जो पशुओं के लिए हानिकारक है। अप्रैल माह में बुआई की गई ज्वार को किसानों द्वारा 2-3 बार पानी अवश्य दें।
- बरसात के मौसम में चारे की अच्छी पैदावार लेने के लिये ज्वार एवं मक्का की बुआई करें।
- खरीफ चारा (ज्वार, बाजरा, बोड़ा, दीनानाथ इत्यादि) की बुआई प्रारंभ कर दें।
- हरे चारे की फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए उन्नत किस्म के बीच का प्रयोग करें।
- खरीफ में हरा चारा लेने के लिये ज्वार एवं मक्का की बुआई करें।
- चूंकि जून का महीना काफी गर्म रहता है, इसलिये पशु के लिये अलग से शेड का निर्माण करना चाहिये तथा अधिक से अधिक स्वच्छ पानी पिलाना चाहिए।
- अधिक दूध देने वाली पशुओं को तरह कैल्शियम फॉस्फोरस 70-100 ग्राम प्रतिदिन पिलायें।
- पशुओं को बाह्य परजीवियों से बचाने के लिये पशु चिकित्सक की सलाह पर दवा का प्रयोग नियमित रूप से करें।
- पिछले माह में भेड़ को ऊन कतरने का कार्य न किया हो तो इस माह में कर लें।

प्रकाशक :- पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना-1, दूरभाष सं०: 0612-2217872
सौजन्य :- पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

माह जुलाई

- इस माह में वर्षा ऋतु आने की संभावना रहती है। अतः पशु परिसर को सूखा एवं साफ रखना चाहिए तथा गर्मी एवं नमी जनित रोगों से पशुओं को बचाना चाहिए।
- अंत:परजीवी एवं बाह्य परजीवी का प्रकोप इस माह में काफी होता है। अतः इनसे तथा इनसे संबंधित रोगों को बचाव अवश्य करें।
- खुरहा-मुँहपका (एफ.एम.डी. रोग), गलघोंटू (एच.एस.), लंगड़ा बुखार या कृष्णजंघा (बी.क्यू.), इन्टेरोटौक्सिमिया रोग के टीके यदि नहीं लगाए गये हों तो अब अवश्य लगवा दें।
- इस माह में भैंसो का ब्यान शुरू हो जाता है। अतः प्रजनन संबंधी सावधानी के साथ नवजात की सुरक्षा हेतु पूरी जानकारी प्राप्त होनी चाहिए। जैसे पैदा होने के साथ बच्चे के नाल को 1.3 से 2.0 इंच पर धोगे से बांधकर नये ब्लेड से काटकर टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए। प्रसूति गाय एवं भैंस को अलग साफ हवादार सूखा स्थान पर रखना चाहिए।
- इस माह में दुग्ध उत्पादन हेतु उचित मात्रा में खनिज-लवण की मात्रा पशुचिकित्सक की सलाह पर दिया जाना चाहिए अन्यथा खनिज-लवण की कमी से रोग हो सकते हैं।
- सिंचित हरे चारे के खेतों में जानवरों को नहीं जाने दें, क्योंकि लम्बी गर्मी के बाद अचानक वर्षा से जो हरे चारे की बढ़वार होती है उसमें साइनाइड जहर पैदा होने से चारा जहरीला हो जाता है। यह ज्वार के फसल में विशेष तौर पर होता है। ऐसी फसल को समय पूर्व कच्ची अवस्था में न काटें, न जानवरों को खिलायें।
- चारे के लिए मक्का की दूसरी फसल बोने का उचित समय है। बीज मात्रा 25-30 किलोग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- बहुऋतुजीवी चारा घासों की रोपाई करें। संतुलित पशु आहार के लिए मक्का, बाजरा, लोबिया एवं ज्वार की एक साथ बोआई करें।

प्रकाशक :- पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना-1, दूरभाष सं०: 0612-2217872
सौजन्य :- पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

बिहार सरकार

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

पशु चारा

माह अगस्त

- पशुओं को अत्यधिक तापमान एवं तेज धूप से बचाने के लिए उपाय करें।
- खुरहा-मुंहपका (एफ.एम.डी.) रोग, गलघोंटू (हिमोरेजिक सेप्टीसिमिया), लंगड़ा बुखार (कृष्णजंघा), इन्टेराटौक्सिमिया रोग के टीके यदि नहीं लगाए गये हों तो अभी अवश्य लगवा दें।
- पशुओं के खुरहा-मुंहपका रोग से ग्रसित होने पर रोगग्रस्त पशुओं को अलग रखें एवं ग्रसित पशुओं की खान-पान की व्यवस्था भी अलग से करें।
- खुरहा-मुंहपका रोग से ग्रस्त पशुओं के दूध को उसके बछड़ों को न पीने दें। ऐसा करने से बछड़े संक्रमित होने से बचेंगे एवं स्वस्थ रहेंगे।
- रोगग्रस्त पशुओं के मुंह, खुर व थनों के छालों को लाल दवा (पौटेशियम परमैगनेट) का 1% घोल बनाकर धोयें।
- गलघोंटू (Haemorrhagic Septicaemia) एवं जहरवात रोग के लक्षण दिखते ही तुरंत पशु चिकित्सालय से संपर्क करें।
- इस माह में पशुओं में गलाघोंटू एवं लंगड़ी ज्वर रोग की संभावना बनी रहती है। अतः रोग के लक्षण दिखते ही पशुचिकित्सक से तुरंत संपर्क करें।
- भेड़, बकरियों में पी.पी.आर., भेड़ चेचक रोग होने की संभावना रहती है। अतः बचाव के लिए टीके निश्चित रूप से लगवा लें।
- पशुओं को कृमिनाशक की दवा पशु चिकित्सक से परामर्श के बाद निश्चित रूप से दें।
- पशुओं को बाह्य परजीवी हो जाने पर पशु चिकित्सक की सलाह लेकर बाह्य परजीवी की दवा का उपयोग करें।
- बरसात के मौसम में पशु घरों को साफ-सुथरा एवं सूखा रखें।
- यदि आपके पशुओं में मुंहपका-खुरपका (Foot and Mouth Disease) रोग का प्रकोप है, तो इसे स्वस्थ पशुओं से अलग रखें। यदि आस-पास के पशुओं से यह रोग फैल रहा है तो अपने पशुओं का सीधा संपर्क रोगी पशुओं से नहीं होने दें।
- पशुओं को स्वस्थ रखने के लिए खनिज-मिश्रण 30-50 ग्राम प्रतिदिन दें, जिससे पशुओं में दूध उत्पादन के साथ ही शारीरिक तन्दुरूस्ती बनी रहे।

प्रकाशक :- पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना-1, दूरभाष सं०: 0612-2217872
सौजन्य :- पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

बिहार सरकार

माह सितम्बर

- सितम्बर माह में वातावरण के तापमान में उतार-चढ़ाव के दुष्प्रभावों से पशुओं को बचाने के उपायों पर ध्यान दें। ऐसे समय में पशुओं को दिन के समय धूप से बचाने तथा पीने के पानी को समुचित व्यवस्था करें और रात के समय ठंड से बचने के लिए छप्पर इत्यादि के नीचे पशुओं को बांध कर रखें।
- अच्छा मानसून होने पर पशुशाला में जल भराव समस्या व आद्रता जनित रोगों के संक्रमण की प्रबल सम्भावना बनी रहती है। अत: वर्षा जल निकासी का समुचित प्रबंध करें।
- पशुओं को यथासंभव सूखे व ऊँचे स्थान पर रखें।
- चारागाह/बाड़े की साफ-सफाइ का विशेष ध्यान रखें। समय-समय पर फर्श व दीवारों पर चूने के घोल का छिड़काव करें।
- रक्त परजीवी रोगों जैसे-थाइलेरिया, ट्रिपैनोसोमा, बबेसिया इत्यादि वर्षा काल में जन्म लेते हैं तथा मच्छर, कीट व चींचड़ इत्यादि के द्वारा फैलते हैं। अत: बाड़े के आस-पास गंदा पानी एवं गंदगी एकत्रित न होने दें।
- परजीवीनाशक दवा/घोल अवश्य पिलावें। परजीवीनाशक दवा को हर बार बदल-बदल कर उपयोग में लावें अथवा नजदीकी पशुचिकित्सालय में जाकर गोबर जाँच अवश्य करवायें। विशेष रूप से मेमनों को इन्टेरोटॉक्सिमीया रोग का टीका लगवाएँ।
- गर्मी व नमी जनित रोगों में मुख्य रूप से कोलीबेसिलोसिस, साल्मोनेलोसिसि, कवक (फंफूदी) जनित रोग है। इसके अतिरिक्त गलघोंटू (एच.एस.) और लंगड़ी बुखार (बी.क्यू.) के फैलने की संभावना भी अत्यधिक रहती है। अत: समय रहते इनके टीके पशुओं में अवश्य लगवा लें अथवा रोग होने पर पशुचिकित्सक से तुरंत संपर्क करें।
- हरे चारे की अधिक उपलब्धता के कारण पशुओं में हरे चारे के अधिक सेवन से संबंधित समस्याओं से बचने के लिए, पशुओं को बार-बार खुले में चरने के लिए नहीं भेजें। इससे संक्रमण होने की संभावना बढ़ती है। इसलिए हरे चारे/दाने के साथ लवण-मिश्रण दें।
- चारे के संग्रहण पर विशेष ध्यान दें। नमी के कारण कई फंफूद जनित रोगों के संक्रमण का खतरा रहता है।
- हरे चारे से साईलेज बनाएँ अथवा हरे चारे के साथ सूखे चारे को मिलाकर खिलाएँ क्योंकि हरे चारे के अधिक सेवन से पशुओं में दस्त की समस्या हो सकती है।
- सितम्बर माह में बरसीम, लूसर्न की बुआई कर सकते हैं।
- मक्का, नेपियर, गिनी घास, ज्वार, सूडान आदि से इस माह में ज्यादा मिलते हैं। इनका उपयोग भी हरे चारे के रूप में कर सकते हैं।

प्रकाशक :- पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना-1, दूरभाष सं०: 0612-2217872
सौजन्य :- पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

बिहार सरकार

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

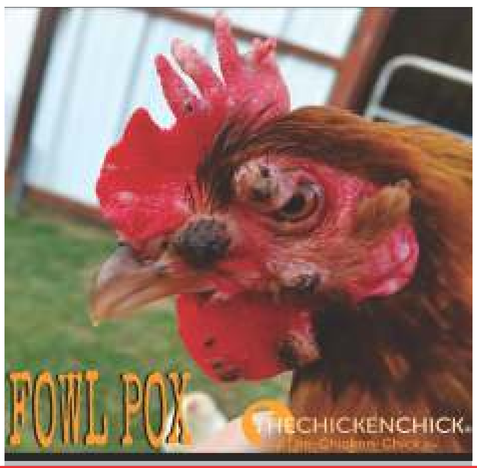

माह अक्तूबर

- इस माह से सर्दी का असर शुरू हो जाता है। अत: ठंड से बचने के लिए उचित प्रबंध कर लिया जाना चाहिये।
- सर्दी के मौसम में गाय/भैंस के ब्याने का प्रतिशत सबसे ज्यादा रहता है। अत: माता एवं बच्चों के लिए संतुलित आहार, मौसम संबंधित बचाव एवं पर्याप्त आवास की व्यवस्था कर ली जानी चाहिए।
- इस माह में जई/बरसीम की उत्तम किस्में (मिट्टी के अनुसार) बो देने चाहिए, जिससे कि पशुओं को पर्याप्त मात्रा में हरा चारा मिलता रहे।
- एफ0एम0डी0 का टीकाकरण अगर नहीं करवाये हों तो इसे अवश्य करवा लें तथा बीमारी फैलने पर पौटेशियम परमैगनेट सोल्यूशन 1% से घाव को धोते रहना चाहिए एवं नजदीकी पशु चिकित्सालय से सलाह लेनी चाहिए। संभावित क्षेत्रों में एन्थ्रेक्स का भी टीकाकरण करवा लेना बेहतर होगा।
- बकरियों एवं भेड़ों में इन्टेरोटौक्सिमिया का टीकाकरण न करवाया गया हो तो इसे अवश्य करवा लिया जाना चाहिए।
- बकरियों एवं भेड़ों में अगर पी0पी0आर0 का टीकाकरण न करवाया गया हो तो इसे अवश्य करवा लिया जाना चाहिए।
- ठंड से बचने के लिए पशुओं को 25 ग्राम से 50 गाम प्रत्येक दिन गुड़ खिलाया जाना चाहिए।
- चूंकि हरा चारा की अधिकता रहती है, अत: इसे संतुलित मात्रा में ही दिया जाना चाहिए एवं शेष बचे हरा चारा को भविष्य के लिए सुरक्षित करने हेतु पुआल/साइलेज बना लिया जाना चाहिए।
- दुधारू पशुओं को 50 से 100 एम0एल0 तरल कैल्सियम फास्फोरस पिलाया जाना चाहिए।
- कभी-कभी इस मौसम में कुछ जगहों पर एच0एस0 या बी0क्यू0 की भी छिट-फूट बीमारी देखने को मिलती हे। ऐसी स्थिति से बचने के लिए टीका नहीं दिये गये पशुओं को टिकाकरण करवा लेना चाहिए एवं पीड़ित पशुओं को पशु चिकित्सक की देख-रेख में चिकित्सा करवानी चाहिए।
- रूटीन चक्रीय डीवर्मिंग पर ध्यान देना चाहिए।
- पशुओं को एसीडोसिसि/अफरा से बचाने के लिए संतुलित हरा चारा एवं दाना देना चाहिए तथा बच्चा देने वाली मादा को संतुलित आहार एवं हल्का व्यायाम करवाते रहना चाहिए।
- अगर पशुपालक बंधु डेयरी फार्मिंग करते हों तो सभी पशुओं को प्रात: बेला में गहन निरीक्षण करना श्रेयस्कर होगा।
- इस माह तक भेंड़पालक बंधु अपने भेंडों से ऊन का संग्रह अवश्य कर लें।
- मुर्गियों के लिए सर्दी का माह सबसे अच्छा माना जाता है। अत: पर्याप्त आवश्यक टीकाकरण, आवास एवं भोजनादि पर ध्यान देना चाहिए।
- पशुशाला को बाह्य परजीवियों से बचाने के लिए स्प्रे/पेंटिंग एवं पशुओं के लिए डिपिंग/स्प्रे का उपयोग करना चाहिए।
- खेतीबाड़ी एवं पशु प्रबंधन में यथासंभव सामंजस्य बनाये रखा जाना चाहिए।
- इस माह में सर्दी का मौसम शुरू हो जाता है, अत: पशुओं का सर्दी से बचाव का उचित प्रबंध करें।

प्रकाशक :- पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना-1, दूरभाष सं०: 0612-2217872
सौजन्य :- पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

बिहार सरकार

माह नवम्बर

- इस माह में मौसम में बदलाव (गर्मी से सर्दी की ओर) आरंभ हो जाता है। अतः पशुओं को सर्दी से बचाने के उपाय करना चाहिए तथा रात में पशुओं को खुले में नहीं बाँधना चाहिए।
- पशु गृह को इस मौसम में साफ-सुथरा एवं सूखा रखना चाहिए।
- पशुओं की रोग निरोधक क्षमता बनी रहे इसके लिए प्रतिदिन निर्धारित मात्रा में खनिज-मिश्रण दाने में मिला कर देना चाहिए।
- यदि पशुओं को अबतक खुरहा-मुहपका, पी0पी0आर0, एन्टेरोटौक्सिमिया, भेड़/बकरी चेचक इत्यादि रोगों का टीकाकरण नहीं कराया गया है तो इस माह तक अवश्य करवा लें।
- पशु स्वस्थ रहें एवं उत्पादकता बनी रहे इसके लिए पशुओं को अंत:परजीवी से बचाव हेतु कृमिनाशक दवा की उचित खुराक पशुचिकित्सक के सलाह पर दें।
- पशुओं के लिए रब्बी की चारा फसलों (बरसीम, लूसर्न, जई इत्यादि) की बुआई यदि नहीं की गई है तो इस माह तक अवश्य कर लेना चाहिए। यदि बुआई हो चुकी है तो बुआई के 20-25 दिन पर सिंचाई अवश्य कर देनी चाहिए।
- विपरीत परिस्थिति अर्थात् जब चारे का अभाव हो उस समय के लिए चारे का संग्रहण (हे तथा साईलेज के रूप में) कर लेना चाहिए।
- भैंसो को गर्भित करने का यह उचित माह है।
- भेंड़ों के ऊन काटने के 21 दिन बाद उसे बाह्य परजीवी से बचाव हेतु कीटाणु-नाशक दवा के घोल में डुबोएं/भिगाएं।
- बरसीम की बोआई माह के मध्य तक अवश्य पूरी कर लें।

प्रकाशक :- पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना-1, दूरभाष सं०: 0612-2217872
सौजन्य :- पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

बिहार सरकार

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

माह दिसम्बर

- इस माह में तापमान अचानक कम हो जाता है और भीषण ठंड रहती है। पशुओं को अत्यधिक सर्दी से बचाने के उपाय करना चाहिए तथा रात मे पशुओं को कभी भी खुले में नहीं बांधना चाहिए।
- सर्दियों के मौसम में पशुओं को गर्म स्थान पर जैसे छत के नीचे या घास-फूल की छप्पर के नीचे रखना चाहिए। फर्श गीले व ठंडे नहीं रहनी चाहिए।
- धूप निकलने की स्थिति में पशुओं को खुले धूप में बांधे क्योंकि सूर्य की किरणों में जीवाणु एवं विषाणु को नष्ट करने की अपूर्व क्षमता होती है।
- अधिक जाड़ा होने पर पशु के शरीर को गर्म रखने के लिए, शरीर पर कपड़ा या जूट की बोरी बांध दें।
- पशुओं को व्यायाम करायें। रोगी, कमजोर, गाभिन और अपाहिज पशुओं को टहलाकर अथवा स्वस्थ एवं वयस्क पशुओं को हलका या तेज दौड़ाकर व्यायाम कराना चाहिए। इससे पशुओं के सभी अंगों में रक्त संचार सुधरती है।
- खुरहा-मुंहपका रोग, गलाघोंटू, लंगड़ी, भेड़ चेचक आदि रोगों के टीके यदि अभी तक नहीं लगवाएं हो तो कृपया समय रहते अवश्य लगवा लें।
- उचित कृमिनाश्का दवाओं का उपयोग हर तीन महीने पर अवश्य करना चाहिए।
- इस मौसम में कफ, निमोनिया (बछड़ो में) और खांसी संबंधित रोग होने की स्थिति में पशु चिकित्सक से यथाशीघ्र परामर्श लेकर उचित औषधि पशुओं को देना चाहिए।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए पूरा दूध निकालें और दूध दूहने के बाद थनों को कीटाणु नाशक घोल से धो लेना चाहिए।
- पशुओं को खनिज लवण मिश्रण निर्धारित मात्रा में दोने या चारे में मिलाकर दें।
- सर्दियों के मौसम में दलहनी किस्म का हरा चारा जैसे बरसीम, ल्यूसर्न, जई आदि रसदार चारा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहता है। इसलिए इन्हें पशुओं को पर्याप्त मात्रा में देना चाहिए। शुष्क पदार्थ का एक तिहाई भाग हरा चारा होना चाहिए।
- महँगे दाने मिश्रण को दलहनी किस्म के हरे चारे के प्रयोग से कम किया जा सकता है। शरीर निर्वाह हेतु 1 किलोग्राम दाने की आवश्यकता को हरे चारे से पूर्ण किया जा सकता है। हरे चारे की मात्रा ऐ निश्चित अनुपात में ही बढ़ाना चाहिए। अत्यधिक मात्रा में हरा चारा देने से पशुओं में दस्त इत्यादि की समस्या हो सकती है।
- पशुओं को खिलाने के पश्चात् अतिरिक्त हरा चारा अगर बचा हुआ हो तो उसे छाया में सुखाकर सूखी घास 'हे' के रूप में संरक्षित कर लें। यह हरे चारे की अनुपलब्धता में इस्तेमाल किया जा सकता है।

प्रकाशक :- पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना-1, दूरभाष सं०: 0612-2217872

सौजन्य :- पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

पशुपालक कैलेंडर

बिहार सरकार

पशुपालक कैलेंडर

पशुपालकों के लिए कुछ आवश्यक सुझाव

- पशु आवास साफ-सुथरे, ऊँच स्थान पर एवं हवादार होना चाहिए, साथ ही आवास की दिशा ऐसी हो कि आवास में पूरे दिन सूर्य की रोशनी पड़ती रहे। मल-मूत्र तथा जल निकासी की समुचित व्यवस्था हो।
- पशुओं की उत्पादकता एवं प्रजनन क्षमता बनाये रखने के लिए उसे संतुलित आहार देना चाहिए अर्थात् सूखा चारा, हरा चारा एवं दाना मिश्रण सम्मिलित रूप से देना चाहिए।
- पशुओं को प्रतिदिन खनिज-मिश्रण तथा नमक देना चाहिए, साथ ही दुधारू पशुओं को कैल्सियम अवश्य देना चाहिए।
- पशुओं के लिए हरे चारे के रूप में रबी फसल (बरसीम, लूसर्न, जई, सरसों इत्यादि) – जिसकी बुवाई अक्टूबर से दिसम्बर तक की जाती है तथा खरीफ फसल (मक्का, बाजरा, ज्वार, एम0पी0 चेरी इत्यादि) – जिसकी बुवाई मार्च से अगस्त तक की जाती है, लगानी चाहिए।
- विपरीत परिस्थिति अर्थात् जब चारे का अभाव हो के लिए चारे का संग्रहण हे (सुखाया हुआ चारा) अथवा साईलेज (चारे का अचार) के रूप में करना चाहिए। चारा संरक्षण के लिए मक्का, बाजरा, ज्वार, बरसीम, लूसर्न, जई उपयुक्त फसल है।
- पशुओं को अंत:परजीवी से बचाने के लिए कृमीनाशक दवा का प्रयोग प्रत्येक माह अथवा वर्ष में कम से कम दो बार (बरसात के पूर्व एवं बरसात के पश्चात्) अवश्य करना चाहिए।
- बाह्य परजीवी से बचाव हेतु पशुशाला को साफ-सुथरा एवं सूखा रखना चाहिए तथा समय-समय पर बाड़े में सफेदी कराएं एवं पशुशाला के फर्श पर चूने/फिनायल के घोल का प्रत्येक सप्ताह छिड़काव करें। पशु के शरीर को भी कीटनाशक दवा जैसे मेलाथियान, डेल्टामेथ्रीन, साइपरमेथ्रीन (2 मिली0 प्रति ली0 पानी में) से धोना चाहिए। मच्छर के प्रकोप से बचने के लिए बाड़े में शाम में धुंआ करना चाहिए।
- पशुओं को संक्रामक रोगों मुख्यत: खुरहा-मुंहपका, गलाघोंटू, जहरबाद, एन्थ्रैक्स, ब्रूसलोसिस, पी0पी0आर0, एन्टेरोटौक्सेमिया इत्यादि से बचाने हेतु टीकाकरण करवाना चाहिए।
  - ⇒ खुरहा-मुंहपका – पहला टीका चार माह की उम्र में 2-4 सप्ताह बाद बूस्टर तत्पश्चात् प्रत्येक छह माह पर (सामान्यत: मार्च-अप्रैल एवं सितम्बर-अक्टूबर में)।
  - ⇒ गलाघोंटू – पहला टीका छह माह की उम्र में तत्पश्चात् प्रत्येक वर्ष बरसात के पूर्व (मई-जून में)।
    जहरबाद – पहला टीका छह माह की उम्र में तत्पश्चात् प्रत्येक वर्ष बरसात के पूर्व (मई-जून में)।
  - ⇒ एन्थ्रैक्स – पहला टीका छह माह की उम्र में तत्पश्चात् प्रत्येक वर्ष बरसात के पूर्व (मई-जून में)।
  - ⇒ ब्रूसेलोसिस – सिर्फ मादा गो-भैंस में 4-9 माह की उम्र में।
  - ⇒ पी0पी0आर0 – बकरी में चार माह या अधिक उम्र में टीकाकरण, जो तीन वर्षो के लिए रोग निरोधक क्षमता प्रदान करती है। टीकाकरण का उचित समय सितम्बर-अक्टूबर।
- गर्म पशुओं को पशुचिकित्सक की सलाह पर कृत्रिम गर्भाधान करायें।
- भैंस को गर्भित करने का उचित माह अक्टूबर से दिसम्बर तथा फरवरी से मार्च है।

प्रकाशक :- पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार ऑफ पोलो रोड, पटना-1, दूरभाष सं०: 0612-2217872
सौजन्य :- पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना, दूरभाष सं०: 0612-2224365

Printed at : Surya Enterprises, Patna
www.suryaenterprisespatna.com
E-mail : surya_ent_patna@yahoo.co.in